अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल

समय : 3 घंटा | तत्त्वज्ञान (वर्ष : 2015) | दिनांक 18.12.2015

पांचवा वर्ष : प्रथम प्रश्न पत्र | पूर्णांक – 100

संजया – 25

प्र.1 किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर दें – 10

(क) परिहार विशुद्धि चारित्र वाले किस देवलोक से आगे नहीं जा सकते हैं? कारण सहित उत्तर दें?

(ख) अतीर्थी किसे कहते हैं? उदाहरण सहित लिखें।

(ग) सूक्ष्मसंपराय चारित्र का क्षेत्र कितना व किस अपेक्षा से है?

(घ) षट्स्थानपतित से आप क्या समझते हैं?

(ङ) छेदोपस्थापनीय चारित्र की गति, स्थिति व पद्वी लिखें।

(च) यदि पांच कर्मों की उदीरणा हो तो किन–किन कर्मों की उदीरणा होती है? तथा किस गुणस्थान में किस समय होती है?

(छ) सूक्ष्म संपराय चारित्र की उत्कृष्ट स्थिति एक तथा अनेक जीवों की अपेक्षा अन्तर्मुहुर्त्त ही कही गई है इसे अपेक्षा सहित बतलाएँ।

प्र.2 किन्हीं पांच प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिये – 5

(क) जीव की अनाहारक अवस्था किस समय पाई जाती है?

(ख) उपसंपदहान किसे कहते हैं?

(ग) सामायिक तथा छेदोपस्थापनीय चारित्र के अल्पाबहुत्त्व की उत्कृष्ट पर्याय लिखें।

(घ) यथाख्यात चारित्र को अंतररहित क्यों माना गया है?

(ड.) प्रव्रज्या द्वार में किसका उल्लेख किया जाता है?

(च) प्रथम तीन चारित्र को नो संज्ञोपयुक्त किस अपेक्षा से माना गया है?

(छ) सूक्ष्म संपराय चारित्र का आकर्ष द्वार लिखें।

प्र.3 कोई पांच द्वार लिखें – 10

(क) छेदोपस्थापनीय चारित्र – अंतर द्वार (ख) सामायिक चारित्र – काल द्वार

(ग) यथाख्यात चारित्र – प्रव्रज्या द्वार (घ) परिहारविशुद्धि चारित्र – स्थिति द्वार

(ङ) यथाख्यात चारित्र – परिणाम द्वार

(च) सूक्ष्म संपराय चारित्र – सन्निकर्ष द्वार (छ) परिहारविशुद्धि चारित्र – ज्ञान द्वार।

नियंठा – 25

प्र.4 किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखें – 5

(क) बकुश निर्ग्रंथ में कितने व कौन से समुद्घात पाते हैं?

(ख) लिंग प्रतिसेवना किसे कहा गया है?

(ग) स्नातक निर्ग्रंथ के दो कर्मों की उदीरणा किस समय होती है?

(घ) पुलाक, बकुश व प्रतिसेवना में ज्ञान के कितने व कौन–कौन से विकल्प बनते हैं?

(ड) ग्यारहवें गुणस्थान की स्थिति एक समय क्यों कही गई है?

(च) बकुशपन छोड़कर जीव कहाँ–कहाँ जा सकता है?

(छ) स्नातक में कितनी व कौन सी लेश्या पाई जाती है?

प्र.5 कोई दस द्वार लिखें – 20

(क) बकुश – गति, स्थिति, पद्वी (ख) प्रतिसेवना – आकर्ष द्वार (ग) निर्ग्रंथ – परिणाम द्वार

(घ) कषायकुशील – क्षेत्र द्वार (ङ) प्रतिसेवना – उपसंपद्हान द्वार (च) बकुश – स्थिति द्वार

(छ) पुलाक – सन्निकर्ष द्वार (ज) निर्ग्रंथ – प्रव्रज्या द्वार (झ) प्रतिसेवना – अंतर द्वार

(ञ) कषायकुशील – कर्म उदीरणा द्वार (ट) पुलाक – परिणाम, स्थिति द्वार
(ठ) कषायकुशील – कर्मबंध द्वार।

गीतिका – नियंठा दिग्दर्शन – 10

प्र.6 किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर संक्षिप्त लिखें – 2
(क) पुलाक, बकुश और निर्ग्रंथ को कौन से चावलों की भांति माना गया है?
(ख) ज्ञाता सूत्र में भगवान ने किसे मिथ्यात्वी बताया है?
(ग) निशीथ सूत्र के अनुसार आराधक व विराधक कौन होता है?
(घ) किस गुणस्थान वाला तथा कौन सा मुनि डंडों से सेना को भगा देता है तथा वह किस चीज़ का प्रतिसेवन भी करता है?

प्र.7 कोई दो पद्य को अर्थ सहित पूरा करें – 8
(क) ''निर्ग्रंथ ग्यारमें.....छट्ठे जोय''। (ख) ''पुलाक बकुश.....दृष्टांत जाण''।
(ग) ''मासी चौमासी.....थी जोय''। (घ) ''सम्यक्त थिर.....बांता सोय''।

पूर्व कंठस्थ ज्ञान – 40

प्र.8 सभी प्रश्नों के उत्तर लिखें –
(क) पच्चीस बोल – बीसवां बोल में से आकाशास्तिकाय का बोल 'अथवा' पांचवें से बारहवें दण्डक के नाम लिखें। 2
(ख) चतुर्भंगी – ग्यारहवाँ बोल 'अथवा' संवर तत्त्व की चतुर्भंगी लिखें। 3
(ग) पच्चीस बोल की चर्चा – प्रथम नौ योग की चर्चा 'अथवा' सोलह से चौबीस दण्डक की चर्चा लिखें। 3
(घ) तत्त्वचर्चा – छह द्रव्यों पर छह में नौ की चर्चा 'अथवा' नौ तत्त्व पर चोर साहूकार की चर्चा। 3
(ङ) कर्म प्रकृति – प्रत्येक प्रकृति 'अथवा' अशुभ नाम कर्म भोगने के हेतु। 4
(च) जैन तत्त्व प्रवेश – दृष्टांत द्वार के आधार पर आस्त्रव 'अथवा' सामान्य गुण के भेदों का वर्णन व्याख्या सहित करें। 3
(छ) प्रतिक्रमण – आलोचना सूत्र 'अथवा' अभ्युत्थान सूत्र लिखें। 3
(ज) जैन तत्त्व प्रवेश – पुण्य–पाप द्वार 'अथवा' अंग व उपांग के नाम लिखें। 3
(झ) इक्कीस द्वार – मति श्रुत ज्ञानी में जीव का भेद, गुणस्थान, उपयोग व दृष्टि तथा असंज्ञी में जीव का भेद, योग, दृष्टि व दण्डक 'अथवा' चक्षुदर्शनी में जीव का भेद, गुणस्थान, योग व उपयोग तथा औपशमिक सम्यक्त्वी में जीव का भेद, गुणस्थान, उपयोग व भाव। 4
(ञ) बावन बोल – श्रावक के बारह व्रतों के द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव और गुण की चर्चा 'अथवा' चौदह गुणस्थान कितने भाव कितनी आत्मा? 3
(ट) लघुदण्डक –ज्योतिष्क देवों की स्थिति में ग्रह, नक्षत्र, व तारा की स्थिति लिखें 'अथवा' तिर्यंच पंचेन्द्रिय की स्थिति में उरपरिसर्प, भुजपरिसर्प व खेचर की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति लिखें। 3
(ठ) लघुदण्डक का उत्पत्ति द्वार 'अथवा' समुद्घात द्वार लिखें। 3
(ढ़) पाँच ज्ञान – मनःपर्यव ज्ञान का क्षेत्र क्षेत्रतः 'अथवा' वर्धमान अवधिज्ञान की व्याख्या करें। 3